Acknowledgement

स्मरण-आभार

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
M.S. University of Baroda

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु: गुरूदेवो महेश्वर: ।
गुरू: साक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्री गुरूवेनम: ।।

भारतीय संस्कृति में गुरू का स्थान सर्वोपरी माना गया है। इस शोध-कार्य की पूर्णता में मुझे यह कथ्य सजीव एवं सत्य प्रतीत हुआ। इस सुअवसर पर 'सर्वप्रथम', में अपने गुरू व निर्देशक **डॉ ओम प्रकाश यादव** का सहार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। उन्होनें उनके ज्ञान व शिक्षा की ज्योति का एक छोटा सा दीपक मुझे सोंपा था, यह शोध-कार्य उसी का उत्पाद है। समय-समय पर तेज हवाओं से इस ज्योति को बुझने से रोकने के उनके प्रयास सराहनीय हैं। **डॉ ओम प्रकाश यादव जी** बहुत ही सहायक, उत्प्रेरक एवं शिक्षा ज्ञाता तथा देता हैं। उनकी सहायता एवं मार्गदर्शन को शब्दों से व्यक्त करना बेमानी होगा, उनके लिए केवल जीवन पर्यन्त आदर समर्पण करते हुए, उनके दी हुई ज्योति को जीवन पर्यन्त प्रज्जवलित रखना ही सही गुरू-दक्षिणा होगी।

तत्पश्चात्, उन सभी शिक्षाविदों का आभार करना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे इस कार्य को सफल बनाने में सीधा या परोक्ष रुप से सहायता की।इनमें माननीय कुलाधिपति, कुलपति, डीन (कला), विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), आचार्यगण एवं समस्त सहपाठी प्रमुख हैं।

इनके साथ ही विश्वविद्यालय एवं उसके अंग जैसे पुस्तकालय, कार्यालय, प्रांगण से जुडे सभी कर्मचारियों का आभार व्यक्त करुगीं, जिन्होंने समय-समय पर किसी-न-किसी प्रकार का सहयोग प्रदान किया।

इस शोध-कार्य में मेरे परिवार का सहयोग एक महत्वपूर्ण योगदान रखता है। इसमें सर्वप्रथम अपने जीवन साथी डॉ मुकेश कुमार यादव के सहयोग की सराहना करना चाहूँगी, जिन्होंने यथासम्भव अपनी समस्त क्षमताओं के साथ मुझे सहयोग किया। साथ ही अपनी पुत्री सिया एवं पुत्र तथ्य की भी आभारी एवं क्षमाप्रार्थी हूँ, जिनके लिए कभी-कभी मेने समय में कटौती करी। इसके साथ ही, मैं अपने समस्त परिवारजनों एवं मित्रों को स्मररित करती हूँ, जिन्होंने परोक्ष व मानसिक रुप से इस शोध-कार्य को सफल बनाने में मेरी मदद की।

अन्त में, मैं उन सभी को धन्यवाद करना चाहूँगी, जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष, सत्य-असत्य, मन-विमन, मधुरता-कटुता, सीधा-व्यंग्य या किसी भी तरह से इस शोध-ग्रन्थ को बनाने में सहयोग किया।

समस्त आभार व अनचाही गलतियों के लिये क्षमा के साथ।